Chori chori maakhan khai gayo re Lyrics in Hindi and English

Chori chori maakhan khai gayo re Lyrics in Hindi

धुन- पिंजरे वाली मुनिया
चोरी, चोरी माखन, खाई गयो रे,
यशोदा के ललनवा ll
मां यशोदा के ललनवा, यशोदा के ललनवा ll
धुन- पिंजरे वाली मुनिया
चोरी, चोरी माखन, खाई गयो रे,
यशोदा के ललनवा ll

मैंने, उसे पूछा कि, नाम तेरा क्या है,
मैंने, उसे पूछा, होए, होए, होए, होए,
मैंने, उसे पूछा कि, नाम तेरा क्या है l
माधव, नाम, बताई गयो रे, यशोदा के ललनवा l
धुन- पिंजरे वाली मुनिया
चोरी, चोरी माखन, खाई गयो रे,
यशोदा के ललनवा ll

मैंने, उसे पूछा कि, गाँव तेरा क्या है,
मैंने, उसे पूछा, होए, होए, होए, होए,
मैंने, उसे पूछा कि, गाँव तेरा क्या है l
गोकुल, गाँव, बताई गयो रे, यशोदा के ललनवा l
धुन- पिंजरे वाली मुनिया
चोरी, चोरी माखन, खाई गयो रे,
यशोदा के ललनवा ll

मैंने, उसे पूछा कि, खाना तेरा क्या है,
मैंने, उसे पूछा, होए, होए, होए, होए,
मैंने, उसे पूछा कि, खाना तेरा क्या है l
माखन, मिश्री, बताई गयो रे, यशोदा के ललनवा l
धुन- पिंजरे वाली मुनिया
चोरी, चोरी माखन, खाई गयो रे,
यशोदा के ललनवा ll

मैंने, उसे पूछा कि, काम तेरा क्या है,
मैंने, उसे पूछा, होए, होए, होए, होए,
मैंने, उसे पूछा कि, काम तेरा क्या है l
माखन, चोरी, बताई गयो रे, यशोदा के ललनवा l
धुन- पिंजरे वाली मुनिया
चोरी, चोरी माखन, खाई गयो रे,
यशोदा के ललनवा ll

मैंने, उसे पूछा माँ, बाप तेरे कौन है,
मैंने, उसे पूछा, होए, होए, होए, होए,

मैंने, उसे पूछा माँ, बाप तेरे कौन है l
नंद, यशोदा, बताई गयो रे, यशोदा के ललनवा l
धुन- पिंजरे वाली मुनिया
चोरी, चोरी माखन, खाई गयो रे,
यशोदा के ललनवा ll

मैंने, उसे पूछा कि, प्यारी तेरी कौन है,
मैंने, उसे पूछा, होए, होए, होए, होए,
मैंने, उसे पूछा कि, प्यारी तेरी कौन है l
राधा, रानी जी, बताई गयो रे, यशोदा के ललनवा l
धुन- पिंजरे वाली मुनिया
चोरी, चोरी माखन, खाई गयो रे,
यशोदा के ललनवा ll

Chori chori maakhan khai gayo re Lyrics in English

Dhun- Pinjre Wali Muniya
Chori, chori makkhan, khai gayo re,
Yashoda ke lalanwa ll
Maan Yashoda ke lalanwa, Yashoda ke lalanwa ll
Dhun- Pinjre Wali Muniya
Chori, chori makkhan, khai gayo re,
Yashoda ke lalanwa ll

Maine, use poocha ki, naam tera kya hai,
Maine, use poocha, hoye, hoye, hoye, hoye,
Maine, use poocha ki, naam tera kya hai l
Madhav, naam, batai gayo re, Yashoda ke lalanwa l
Dhun- Pinjre Wali Muniya
Chori, chori makkhan, khai gayo re,
Yashoda ke lalanwa ll

Maine, use poocha ki, gaon tera kya hai,
Maine, use poocha, hoye, hoye, hoye, hoye,
Maine, use poocha ki, gaon tera kya hai l
Gokul, gaon, batai gayo re, Yashoda ke lalanwa l
Dhun- Pinjre Wali Muniya
Chori, chori makkhan, khai gayo re,
Yashoda ke lalanwa ll

Maine, use poocha ki, khana tera kya hai,
Maine, use poocha, hoye, hoye, hoye, hoye,
Maine, use poocha ki, khana tera kya hai l
Makkhan, mishri, batai gayo re, Yashoda ke lalanwa l
Dhun- Pinjre Wali Muniya
Chori, chori makkhan, khai gayo re,
Yashoda ke lalanwa ll

Maine, use poocha ki, kaam tera kya hai,
Maine, use poocha, hoye, hoye, hoye, hoye,
Maine, use poocha ki, kaam tera kya hai l

Makkhan, chori, batai gayo re, Yashoda ke lalanwa l
Dhun- Pinjre Wali Muniya
Chori, chori makkhan, khai gayo re,
Yashoda ke lalanwa ll

Maine, use poocha maa, baap tere kaun hai,
Maine, use poocha, hoye, hoye, hoye, hoye,
Maine, use poocha maa, baap tere kaun hai l
Nand, Yashoda, batai gayo re, Yashoda ke lalanwa l
Dhun- Pinjre Wali Muniya
Chori, chori makkhan, khai gayo re,
Yashoda ke lalanwa ll

Maine, use poocha ki, pyaari teri kaun hai,
Maine, use poocha, hoye, hoye, hoye, hoye,
Maine, use poocha ki, pyaari teri kaun hai l
Radha, Rani Ji, batai gayo re, Yashoda ke lalanwa l
Dhun- Pinjre Wali Muniya
Chori, chori makkhan, khai gayo re,
Yashoda ke lalanwa ll

About Chori chori maakhan khai gayo re Bhajan in English

“Chori Chori Makkhan Khai Gayo Re” is a playful and devotional bhajan dedicated to **Lord Krishna**, highlighting his mischievous and charming nature as a child. This bhajan reflects the well-known story of **Lord Krishna** stealing butter from the Gopis’ houses, a beloved tale that illustrates Krishna’s divine playfulness (Lila) and his ability to win the hearts of everyone around him with his innocence and charm. The bhajan describes how Krishna, affectionately known as **Yashoda’s Lalanwa** (beloved child), would secretly steal butter and enjoy it, often caught by his devotees who would express both admiration and mock anger at his antics.

- **Krishna’s Playful Nature:** The central theme of the bhajan revolves around Lord Krishna’s playful act of **stealing butter** (Makkhan). The line “Chori chori makkhan khai gayo re” emphasizes his mischievous ways of secretly taking butter from the Gopis’ houses, a popular story that showcases Krishna’s divine leela (play).
- **Devotion to Krishna:** The bhajan conveys the deep love and devotion that his mother **Yashoda** and the people of **Gokul** have for Krishna, despite his playful and sometimes naughty acts. The repeated mention of “Yashoda ke lalanwa” refers to Krishna as Yashoda’s beloved child, symbolizing the deep maternal affection she has for him, despite his pranks.
- **Krishna’s Divine Mischief:** Krishna’s playful stealing of butter is seen not just as a child’s innocent mischief but as a divine act that creates joy and devotion in the hearts of his devotees. It emphasizes how Krishna’s playful nature is a form of divine grace that brings people closer to him.
- **Spiritual Symbolism:** While the bhajan humorously depicts Krishna’s butter-stealing, it also carries spiritual significance. Butter is often symbolic of the heart’s pure love, and Krishna, as the butter thief, symbolically “steals” the pure devotion of his devotees. His acts invite devotees to surrender their hearts completely to him.
- **The Devotee’s Joy and Affection for Krishna:** The bhajan highlights the loving relationship between Krishna and his devotees. Despite Krishna’s playful acts, the people of **Gokul** adore him deeply. This bhajan is an expression of how Krishna’s divine charm wins over everyone,

even when he indulges in mischief.

Overall, “Chori Chori Makkhan Khai Gayo Re” is a joyful and affectionate bhajan that captures the essence of Krishna’s playful childhood, his pranks, and the love he receives from his devotees. It showcases his divine leela in a lighthearted way, inviting devotees to connect with Krishna’s innocent and mischievous nature, which in turn leads them to spiritual joy and love. The bhajan reminds the devotee to embrace Krishna’s playfulness and love, understanding that through his mischief, he brings everyone closer to the divine.

About Chori chori maakhan khai gayo re Bhajan in Hindi

“चोरी, चोरी माखन खाई गयो रे” भजन के बारे में

“चोरी, चोरी माखन खाई गयो रे” एक अत्यंत भक्ति से भरा और आनंदमय भजन है जो **भगवान श्री कृष्ण** के बालपन और उनकी चंचलता को दर्शाता है। यह भजन भगवान कृष्ण के प्रसिद्ध बाल लीलाओं, विशेष रूप से **माखन चोरी** की कहानी को प्रस्तुत करता है। यह भजन भगवान कृष्ण की शरारत और प्रेम से भरे चंचल स्वभाव को चित्रित करता है, जहां वह गोपियों के घरों से चुपके से माखन चुराते थे और अपनी मासूमियत से सबका दिल जीत लेते थे।

- **कृष्ण की शरारत भरी बाल लीलाएं :** भजन का मुख्य विषय भगवान कृष्ण की प्रसिद्ध माखन चोरी की लीलाओं पर आधारित है। “चोरी, चोरी माखन खाई गयो रे” पंक्ति कृष्ण के द्वारा गोपियों के घरों से माखन चुराने की शरारत को दर्शाती है, जो उनके बचपन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस भजन में कृष्ण के इस मासूम और चंचल रूप की सुंदरता को दर्शाया गया है।
- **भगवान कृष्ण का दिव्य आकर्षण :** भगवान कृष्ण की शरारतों के बावजूद उनकी मासूमियत और आकर्षण कभी भी भक्तों की श्रद्धा को कम नहीं करता। “यशोदा के ललनवा” पंक्ति कृष्ण के प्रति माँ यशोदा के गहरे प्रेम को प्रकट करती है। चाहे कृष्ण कितनी भी शरारत करें, माँ यशोदा और अन्य भक्तों का प्रेम और सम्मान कभी कम नहीं होता।
- **दिव्य प्रेम और भक्ति :** माखन चोरी की घटना केवल कृष्ण की शरारत का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह भगवान कृष्ण के प्रति भक्तों की अडिग भक्ति और प्रेम को भी दर्शाती है। भजन में कृष्ण का माखन चुराना एक रूपक के तौर पर है, जिसमें वह भक्तों के दिलों को चुराते हैं और उन्हें अपनी भक्ति में पूरी तरह से खो जाने के लिए प्रेरित करते हैं।
- **माखन और मिश्री का प्रतीकात्मक महत्व :** माखन और मिश्री को भगवान कृष्ण के प्रिय भोज्य पदार्थों के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो भक्तों को उनके साथ एक गहरे और आत्मिक संबंध में बांधने का कार्य करते हैं। “माखन, मिश्री, बताई गयो रे” पंक्ति में इन पदार्थों के माध्यम से भगवान कृष्ण की दिव्यता और उनके प्रति भक्तों के प्रेम को उजागर किया गया है।
- **कृष्ण के साथ एकात्मता और आनंद :** भजन के अंत में यह दर्शाया गया है कि कृष्ण की शरारतें और उनके माखन चोरी के खेल केवल आनंद का कारण नहीं हैं, बल्कि वे भक्तों को उनके प्रति पूरी तरह से समर्पित और उनके प्रेम में रंगी हुई आत्माओं के रूप में बदलने के लिए प्रेरित करते हैं।

कुल मिलाकर, “चोरी, चोरी माखन खाई गयो रे” एक प्रेममय और आनंदित भजन है जो भगवान श्री कृष्ण के बाल रूप, उनकी मासूम शरारतों और उनके प्रति भक्तों के असीम प्रेम और भक्ति को व्यक्त करता है। यह भजन भगवान कृष्ण की लीलाओं में पूर्ण रूप से डूबने और उनके साथ दिव्य संबंध बनाने के लिए भक्तों को प्रेरित करता है।